सनातन भारत

जागृत भारत

सम्पूर्ण जागृतिके लिये प्रयत्न अभी शेष है

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

अधिकारीतन्त्र भारतके सहज उद्यमको प्रतिबाधित करता है

स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्त भारतके अनेक नगर अपने-अपने क्षेत्रोंके विभिन्न कुटुम्बों एवं समुदायोंके सहज उद्यम एवं सम्मिलित प्रयासोंसे अत्यन्त सघन, सक्षम एवं सफल उद्योगोंके केन्द्रोंके रूप में उभरे हैं। देशमें अन्य अनेक स्थानोंपर लोग उन केन्द्रोंसे स्पर्धा एवं उनका अनुकरण करते हुए अपनी उद्यमशीलता एवं औद्योगिक दक्षताकी सशक्त अभिव्यक्तिके अवसर जुटानेके सब सम्भव प्रयास कर रहे हैं। तथापि औद्योगिक सफलताकी गाथाएँ कतिपय गिने-चुने केन्द्रोंतक ही सीमित रहीं हैं। इन अत्यन्त सफल दिखाई देनेवाले केन्द्रोंके युवा उद्यमी भी और आगे बढ़ने, अपने उत्पादनोंकी गुणवत्ता एवं उद्योगके आकारको विश्वस्तरके समकक्ष पहुँचाने और विश्वके साथ समानताके स्तरपर स्पर्धामें उतरनेके अपने प्रयासोंको विभिन्न प्रकारसे प्रतिबन्धित हुआ पाते हैं।

भारतका अधिकारीतन्त्र साधारण उद्यमियोंके मार्गमें ऐसी क्षोभदायी बाधाएँ खड़ी करता है जो अदम्य साहसको भी क्षीण कर दें। ब्रितानी प्रशासकोंने प्रत्येक स्तरपर भारतीयोंके संकल्पका क्षय करने एवं उनके उद्यमको कुण्ठित करनेके लिये ही इस तन्त्रको रचा था। स्वतन्त्रताप्राप्तिके अनेक दशक पश्चात् भी हम इस क्षयकारी तन्त्रको ढोये चले जा रहे हैं।

तमिलनाडुके एक भुक्तभोगी उद्यमीकी गणनाके अनुसार उद्योगमें प्रवृत्त उस जैसे किसी साधारण उद्यमीको ४३ विभिन्न राजकीय निरीक्षकोंसे निपटना पड़ता है, १६५ प्रकारके रजिस्टर और फार्म भरने पड़ते हैं और कोई २२ पृथक्-पृथक् वैधानिक अधिकारियोंकी अनुमति प्राप्त करनी पड़ती है। शिवकाशीके उद्यमियोंके जो प्रतिनिधि चीनके पटाका उद्योगका अध्ययन करने युन्नान गये थे उनके अनुसार वहाँ किसी उद्यमीके लिये पटाके बनाने जैसा संवेदनशील उद्योग लगानेसे पूर्व मात्र स्थानीय पुलिसकी अनुमति लेना पर्याप्त होता है।

हमारा महानगरीय सम्भ्रान्त वर्ग सहज स्वदेशी उद्यमके प्रति आश्वस्त नहीं है

भारतके अंग्रेजी पढ़े-लिखे महानगरीय विशिष्ट लोगोंका सम्भ्रान्त वर्ग अपने-अपने कुटुम्बों एवं सहज समुदायोंमें आश्रित छोटे नगरोंके स्वदेशी उद्यमियोंको प्रगतिके मार्गमें बाधा-सा ही मानता है। अपने आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, अपनी तकनीकी दक्षताओं एवं अपने महानगरीय साधनोंका उपयोग देशके सहज-स्वदेशी उद्यमियोंकी क्षमताओंकी संवृद्धिमें नियुक्त करनेकी अपेक्षा, भारतके ये सम्भ्रान्तजन उनकी नितान्त उपेक्षा करने अथवा उनके मार्गमें बाधाएँ खड़ी करनेमें ही प्रवृत्त रहते हैं।

पटाकोंका उत्पादन अत्युच्च दक्षताओंपर आधारित उद्यम है। इसमें विशिष्ट तकनीकों और विशेषतः रासायन एवं भौतिक विज्ञानकी व्यापक जानकारीकी आवश्यकता पड़ती है। कदाचित् इसीलिये बीजिंगके विश्वविद्यालयमें पटाके बनानेके विज्ञान एवं तकनीकपर विशेष शिक्षाका प्रबन्ध किया गया है। इसके ठीक विपरीत भारतके महानगरीय सम्भ्रान्त लोगोंका एक वर्ग शिवकाशीके पटाका उत्पादकोंके उद्यमको कुण्ठित करनेके सतत प्रयासोंमें रत दिखाई देता है। ये लोग वर्षोंसे शिवकाशीके पटाका उद्योगके विरुद्ध एक सुनियोजित अभियान चला रहे हैं। इस अभियानमें शिवकाशीके पटाका उत्पादकोंपर पहले यह आरोप लगाया गया कि उनका समस्त उद्योग अबोध बालकोंके श्रमपर चल रहा है। जब यह आरोप प्रायः पूर्णतः असत्य प्रमाणित हो गया तो एक नया विवाद खड़ा कर लिया गया। बड़े स्तरपर, महानगरीय समाचारपत्रोंमें बड़े-बड़े विज्ञापनोंके माध्यमसे, प्रचार किया गया कि वर्षमें मात्र एक दिन दीपावलीके भव्य भारतीय पर्वपर पटाकोंका चलना पर्यावरणके लिये बहुत बड़ा संकट प्रस्तुत करता है। महानगरीय सम्भ्रान्त स्कूलोंके अबोध बच्चोंको इस प्रचारमें सहभागी बनाया गया, उनसे शपथें दिलवायी गयी कि वे न तो स्वयं पटाके चलायेंगे और न अपने भाई-बहिनोंको ऐसा करने देंगे। इस प्रकार भारतके सबसे बड़े पर्वको परम्परागत वैभवसे मनानेके विषयमें बच्चोंमें अपराधबोध भरा गया और भारतके एक सफल स्वदेशी उद्योगको प्रायः विनष्ट करनेका प्रयास किया गया।

भारतका साधनसम्पन्न एवं बोलनेमें प्रखर महानगरीय सम्भ्रान्त वर्ग कुटुम्बों एवं समुदायोंपर आश्रित भारतके सहज स्वदेशी उद्यमका सहभागी एवं सहायक बननेकी अपेक्षा उसके विरोधमें खड़ा है। यह भारतकी अपार औद्योगिक क्षमताओंके साकार होने और भारतीय अर्थव्यवस्थाके सम्यक् उत्कर्षमें कदाचित् सबसे बड़ी बाधा है।

वैश्वीकरणसे नये संकट खड़े हो रहे हैं

भारतके स्वदेशी उद्यमी कठिन परिस्थितियोंमें कार्य करते हुए, अधिकारीतन्त्र एवं महानगरीय सम्भ्रान्त लोगों द्वारा प्रस्तुत समस्त बाधाओंका सामना करते हुए, अपने-अपने क्षेत्रमें कहीं सीमित और कहीं अत्यन्त भव्य सफलता अर्जित करते रहे हैं। अब प्रायः विवेकहीन वैश्वीकरणके अभियानने उनके समक्ष नये संकट ला खड़े किये हैं।

भारतमें सर्वत्र स्थानीय उद्यमी भविष्यके प्रति चिन्तित एवं सशंकित हैं। तिरुप्पूरके उद्यमियोंका कहना है कि पिछले अनेक दशकोंसे वे अपने लाभका प्रायः सर्वांश उद्योगमें पुनर्निवेशित करते रहे हैं। व्यक्तिगत उपभोग एवं सञ्चयनके विषयमें वे अत्यन्त मर्यादित रहे हैं, अपने उद्योगके विस्तार एवं उन्नयनको ही वरीयता देते आये हैं। परन्तु अब कुछ वर्षोंसे वे उद्योगमें और अधिक निवेश करनेकी उपादेयताके विषयमें आश्वस्त नहीं रहे, वैश्वीकृत नये बाजारोंमें वस्त्र उद्योगकी एवं भारतकी स्थितिको लेकर उनके मनमें अनेक शंकाएँ उठ रही हैं। शिवकाशीके पटाका निर्माता तो न केवल अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर अपितु भारतके बाजारोंमें ही चीनके साथ स्पर्धाकी आशंकामें हैं। ऐसी ही आशंकाएँ भारतमें सर्वत्र सब प्रकारके उद्यमी व्यक्त कर रहे हैं।

भारतीय राज्य एवं भारतके सम्भ्रान्त वर्गने बिना किसी प्रकारकी सहायता अथवा सहयोगका प्रबन्ध किये भारतके स्वदेशी उद्यमियोंको वैश्विक बाजारसे जोड़ दिया है। भारत जैसी आर्थिक स्थितिवाले विश्वके अन्य देशोंके राज्योंने वैश्वीकरणसे उत्पन्न समस्याओंसे जूझनेके लिये अपने उद्यमियोंको अनेक प्रकारकी सहायता, अनेक प्रकारके प्रोत्साहन दिए हैं, अनेक प्रकारसे उन्हें वैश्विक स्पर्धामें सक्षम बनानेके प्रयास किये हैं।

हमारे समतुल्य आर्थिक स्थितिवाले देश ही नहीं, अपितु आजके विश्वके समृद्ध देश भी अपने उद्यमियोंको वैश्वीकरणके दुष्प्रभावोंके विरुद्ध अत्यन्त आक्रामकतासे संरक्षण देते हैं। वैश्विक व्यापारकी नयी व्यवस्थाओंके प्रवर्तित होनेके पश्चात्के कतिपय वर्षोंमें ही संयुक्त राज्य अमरीका और यूरोपीय संघने सैकड़ों वस्तुओंके आयातपर निषेधात्मक सीमाशुल्क लगाया है। परन्तु सस्ती आयातित वस्तुओंसे बाजारके आप्लावित होनेके कारण जब भारतके विभिन्न नगरों एवं पूरे प्रदेशोंका सकल औद्योगिक उद्यम चरमराने लगता है तब भी हम कोई ध्यान देते नहीं दिखते।

ऐसी उदासीनता एवं उपेक्षासे स्वतन्त्रताप्राप्तिके पश्चात् प्रारम्भ हुई भारतके जागरण एवं पुनर्निर्माणकी प्रक्रियाके सम्पूर्णतातक पहुँचनेसे पूर्व ही अवरुद्ध होनेकी आशंकाएँ उठने लगी हैं।